SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भाषा शिक्षण–अधिगम में रचनात्मक लेखन

नन्द किशोर सिंह, शोधार्थी, हिन्दी विभाग
नीलाम्बर पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदिनी नगर, पलामू, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
नन्द किशोर सिंह, शोधार्थी
E-mail : nandkishoresulabh@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/10/2024
Revised on : 16/12/2024
Accepted on : 26/12/2024
Overall Similarity : 01% on 17/12/2024

शोध सार

भाषा शिक्षण की बौद्धिक बीजगठन पद्धति के अंतर्गत रचनात्मक लेखन का वर्गीकरण किया गया है। भाषा में विचारशीलता के आयाम के विकास में बौद्धिक बीजगठन पद्धति सहायक है। रचनात्मक लेखन के क्रियान्वयन के लिए मार्गदर्शिका है–शिक्षार्थियों को मुक्त स्वाभिव्यक्ति की अनुमति, उनको उनके अपने लेखन के आंकलन की अनुमति देना, लेखन के अच्छे प्रतिमानों को देना, सिद्धांतों और नमूना शिक्षण और शिक्षार्थियों को उचित प्रतिपुष्टि देना। रचनात्मक लेखन के कार्यों जैसे कि प्रतिवेदन, अनुदेशन, सुझाव देना, चर्चा करना और वर्गीकरण को कक्षा कक्ष में करने का सुझाव देना।

मुख्य शब्द

रचनात्मकता, बौद्धिक बीजगठन, शिक्षण, श्रवण, वाचन, पठन एवं लेखन.

भूमिका

माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्या के मुख्य उद्देश्यों में से एक है–शिक्षार्थियों में रचनात्मकता का विकास यानि शिक्षार्थियों को स्थितियों, समस्याओं, सामग्रियों और अन्य व्यक्तियों के साथ अपने व्यवहार में रचनात्मक होना होगा इससे उन्हें विद्यालय और प्रजातांत्रिक समाज में प्रभावी सामंजस्य में मदद मिलेगी। रचनात्मकता विकसित करने के प्रभावी तरीकों में एक हैः रचनात्मक लेखन जो रचनात्मक स्वाभिव्यक्ति की अनुमति देता है। रचनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षार्थियों को सुरक्षा और संवाद की अपनी जरूरतों को पूरा करने में और आत्मविश्वास विकसित करने में मदद करती है।

रचनात्मकता को भिन्न लेखकों ने भिन्न तरीकों से परिभाषित किया है। मनोवैज्ञानिकों (गिलफोर्ड, टोरेंस) का विश्वास है कि रचनात्मक रचना और प्रक्रियाओं में

मौलिकता, लचीलेपन, विस्तार, विकेंद्रिकृत विचारशीलता और उपयोगिता का तत्व होता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने रचनात्मकता को स्वतः स्फूर्ति और भावनाओं, विचारों एवं काल्पनिकता के आनंद से जोड़ा है। डोनॉल्ड बरजर की रचनात्मक कार्य की परिभाषा रचनात्मकता की कार्यात्मक संकल्पना समझने में शिक्षकों को शायद मदद करेगी।

रचनात्मकता से अभिप्राय नवीन प्रत्युत्तर से है, जो रचनाकार के लिए अनूठा है। इसकी विशेषता है निजी शुरुआत और चेतन प्रयास। इसमें शामिल है–विचारशीलता और स्वयं लागू किये परीक्षणों अनुसार काम करना और अंततः इस पर प्रारंभकर्ता की सटीक अभिव्यक्ति के रूप में निर्णय लिया जाता है।

यह परिभाषा किसी व्यक्ति के कार्य की अनुपम रचना पर जोर देती है। इस परिभाषा को शायद शिक्षक अपने शिक्षार्थियों के कार्य पर लागू करने के लिए उपयोगी पायेंगे। शिक्षार्थियों में रचनात्मक अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए शिक्षक भिन्न तरह की विधियों और संसाधन सामग्रियों का उपयोग करते हैं। रचनात्मकता अनुभवों से उत्पन्न होती है और पहले से उपस्थित किसी चीज़ के अनूठे पुर्ननिर्माण का प्रतिनिधित्व करती है ताकि ज्यादा उपयोगी, नवीन विचार उभर सकें। शिक्षार्थियों में रचनात्मकता के लिए अडिग प्रेरणा और रचनात्मक अभिव्यक्ति के पोषण हेतु संसाधन सामग्री और गुणात्मक अनुभव प्रदान करने के लिए शिक्षकों का रचनात्मकता को समझना आवश्यक है। रचनात्मक अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए रचनात्मक लेखन बेहद उपयोगी है क्योंकि लेखन में रचनात्मकता के सभी तत्व आ सकते हैं।

उद्देश्य

शोध का उद्देश्य निम्नलिखित हैः

- पाठ्यचर्या संचालन नीति के रूप में रचनात्मक लेखन के उपयोग में,
- रचनात्मक लेखन में बौद्धिक बीजगठन की प्रक्रिया को समझने में,
- पाठ्यचर्या विषयों के शिक्षण में रचनात्मक लेखन के क्रियान्वयन के चरणों को पहचानने में,
- रचनात्मक लेखन के कार्यों को पहचानने में।

मनोवैज्ञानिक आधार बौद्धिक बीजगठन

रचनात्मक लेखन में विषयवस्तु अथवा विचार पहले आते हैं और अभिव्यक्ति बाद में। रचनात्मक लेखन नीति को 'भाषा शिक्षण की बौद्धिक बीजगठन पद्धतियों' के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। बौद्धिक बीजगठन पद्धति भाषा के उस आयाम को विकसित करने में सहायक है जो भाषा से संबंधित है। इसकी दो प्रक्रियाएँ हैं– (i) पठन और (ii) लेखन। भाषा के चार कौशलों जैसे कि श्रवण, वाचन, पठन और लेखन में से पहले दो यानि कि श्रवण और वाचन को वातावरण से स्वाभाविक रूप से सीखा जाता है, जबकि पठन और लेखन को औपचारिक शिक्षण अथवा प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप सीखा जाता है। भाषा एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा हम सोचते हैं और इसलिए हमारी भाषा हमारी विचार प्रक्रिया और चिंतन को प्रभावित करती है। ब्रूनर (1975) ने सुझाव दिया कि मात्र भाषा अधिग्रहण से परे भाषा के लगातार प्रयोग ने मानव प्राणियों को मानसिक शक्तियों में बिल्कुल भिन्न बना दिया है और इसके साथ ही यह बात अधिक मायने रखती है कि यदि कोई व्यक्ति बोलने और सुनने के बजाए पढ़ता और लिखता अधिक है तो वह यह भाषा को 'संदर्भ मुक्त व्याख्या' की ओर ले जाता है।

इस दिशा का अत्याधिक नाटकीय चरण है ऐसी चिन्ह व्यवस्था का विकास जो बोली गई भाषा को ग्राफिक रूप में बदल दे। ''भाषायी कौशल'' भाषा व्यवस्था की संपत्ति है ('संवादात्मक कुशलता' विशाल विविधता वाली सामाजिक परिस्थितियों में इसका प्रयोग है। ब्रूनर ने हमें तीसरे शब्दांश 'विश्लेषणात्मक कुशलता' का सुझाव दिया है, जिसके विकास को विद्यालय और विशेषकर शिक्षा से प्रेरणा मिलती है। इसकी मुख्य विशेषता, पियाजे की औपचारिक क्रियात्मकता की तरह ही है यानि कि इसमें विचारों के विस्तृत व्यवहार का समावेशन है, विशेषकर भाषायी प्रतिनिधित्वों का, प्रस्तावों की संरचना, घटनाओं एवं वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव और विचार नीतियों और प्रस्तावों के संयुक्त प्रभाव का। ऐसा लगता है कि हमारे विचारों को जो जन्म देता है वह विचारशीलता का उच्च

बौद्धिक स्तर है जिसकी व्याख्या शायद हम प्रस्ताव के पक्ष, विपक्ष और निष्कर्ष के रूप में कर सकते हैं।

रचनात्मक लेखन का प्रयोग शिक्षार्थी में बौद्धिक, संवेगात्मक और नैतिक कुशलताओं के विकास के लिए किया जा सकता है। यहाँ पर कुछ ऐसे कार्यों और गतिविधियों के बारे में बताया जा रहा है जिनमें रचनात्मक लेखन कुशलता की आवश्यकता होती है।

सारणी 1

कार्य	गतिविधि	उदाहरण
बौद्धिक		
प्रतिवेदन योजना तर्क कारण बताना आग्रह करना वर्गीकरण	चयनशीलता पूर्वानुमान और काल्पनिक हल प्रमाणों को तौलना पाठकों के दिमाग को समझना? दूसरों की अभिरूचि को महसूस करना वर्गों में व्यस्थित करना	वर्षिक प्रतिवेदन, पंचवर्षीय योजना, जन जिज्ञासा, फैसला लेना, पाठ्यपुस्तक, देय पत्र
संवेगात्मक चिंतन करना तद्नुभूति जगह व्यवस्था तालमेल बिठाना	खुद को खोजना जागरूकता अन्यों की भावनाओं का अनुभव गैर–मानवीय घटनाओं से बातचीत/क्रिया करना मानव परिस्थिति के बारे में परिभाषित कदम उठाना	डायरी उपन्यास दंतकथा कविता
नैतिक मूल्यांकन	नैतिक ब्रह्मांड के अर्थ में अनुभव की समीक्षा	नीति कथा

शिक्षण पद्धति के रूप में रचनात्मक लेखन

रचनात्मक लेखन एक प्रक्रिया है जो रचनात्मक व्यक्तियों को विचारों की खोज, संबंध जोड़ने और नये संदर्भों से देखने में सक्षम बनाती है। इस अर्थ में, रचनात्मक लेखन–अपने बारे में, दूसरे के बारे में और संसार के बारे में सोचने और सीखने की रचनात्मक प्रक्रिया है।

शिक्षण पद्धतियाँ शिक्षण के मनौवैज्ञानिक प्रतिमानों पर आधारित हैं। शिक्षण पद्धतियाँ 'विषयवस्तु युक्त' अथवा 'विषयवस्तु मुक्त' हो सकती हैं। पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधियों को 'शिक्षण पद्धति' कहा जाता है और यह 'विषयवस्तु युक्त' होती हैं। उच्च बौद्धिकता और संवेगात्मक कौशलों के विकास में इस नीति की प्रभावशीलता और क्षमता को शोधकर्ताओं ने दृढ़तापूर्वक स्थापित किया है।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की व्यवस्था करना

यद्यपि रचनात्मक अभिव्यक्ति हाईस्कूल के विद्यार्थियों की एक आतंरिक जरूरत प्रतीत होती है, इसका शिक्षण सरल नहीं है। प्रभावी रचनात्मक लेखन के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी भावनाओं को शब्दों में अभिव्यक्त करने के प्राकृतिक आवेग, एक ऐसा आवेग जो लगभग सभी शिक्षार्थियों में पहले से ही होता है, को शब्दों और चित्रों से कुशलतापूर्वक जोड़े। इस प्रकार से रचनात्मक लेखन की प्रभावी कक्षा वह है जिसमें स्वतंत्रता और अनुशासन के संतुलन को प्राप्त कर लिया गया हो अर्थात् विचारों के आदान–प्रदान खेलने एवं गहरी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता और साहित्यिक कलाकुशलता, पर्याप्त एवं उचित शब्दावली, शब्द संरचना और भाषा निर्माण का अनुशासन हो।

रचनात्मक लेखन क्रियान्वयन के चरण

1. **शिक्षार्थियों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति की अनुमति देना:** अधिकांश शिक्षार्थियों के विद्यालय संबंधी पिछले अनुभव शायद उन्हें उनके निजी विचारों और भावनाओं को मौलिक रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं। सत्र के प्रारंभ में शिक्षक को सबसे ज्यादा ज़ोर शायद शिक्षार्थियों को अपनी भावनाओं की ईमानदार अभिव्यक्ति को सहज बनाने पर देना होगा। नैसर्गिक रचनात्मकता का संवर्धन मुख्यतया विश्वास और स्वीकृति के वातावरण में होता है। चूँकि रचनात्मक लेखन की मांग है खुद के बारे में खुलकर बताना, इसलिए यह जरूरी है कि शिक्षार्थी आश्वस्त महसूस करें कि दूसरों को अपने आंतरिक विचारों की जानकारी देकर वह खुद को मज़ाक नहीं बनवा रहे हैं। रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए उचित वातावरण तैयार करने में शिक्षक की प्रमुख भूमिका है। 'रचनात्मक लेखन' शिक्षण में शिक्षक एक वरिष्ठ सलाहकार, समूह सदस्य के रूप में कार्य करता है जो रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है।
2. **शिक्षार्थियों को स्वयं के आंकलन की अनुमति देना:** शिक्षार्थियों को ऐसी गतिविधियों से लाभ होगा जो उन्हें उनके अपने अनुभवों के परीक्षण एवं उनके बारे में बात करने और अपने अनुभवों की अन्य शिक्षार्थियों के अनुभवों से तुलना और उनमें समानता देखने के लिए प्रोत्साहित करें। समूह में प्रत्येक शिक्षार्थी के अनुभवों का अन्य शिक्षार्थियों के अनुभवों से तुलनात्मक अध्ययन भविष्य में समान घटनाओं का सामना करने की राह खोलता है।
3. **लेखन के अच्छे आदर्श प्रस्तुत करना:** स्वाभिव्यक्ति एक मात्र रचनात्मक लेखन नहीं है चाहे वह कितनी भी मौलिक क्यों न हो इसलिए शिक्षार्थियों को लेखन कला के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त सिखाने का एक सर्वोत्तम तरीका है अच्छे लेखन आदशों द्वारा शिक्षण। कोई भी व्यक्ति जो लेखक के रूप में कुशल है वह एक उत्साहित पाठक भी होता है। पठन लेखक के विचारों और कल्पना को केवल उत्तेजित करने का ही कार्य नहीं करता बल्कि यह विभिन्न शैलियों का परिचय भी देता है, ताकि साहित्यिक उपकरणों का प्रयोग हो सके और लेखक एक तरीके का चयन कर सके। इस प्रकार से, साहित्य का अध्ययन, संपूर्ण रचनात्मक लेखन कार्यक्रम का एक तार्किक हिस्सा है। अन्य लेखकों के द्वारा प्रयोग की गई साहित्यिक शैलियाँ, शिक्षार्थियों को अपनी भिन्न साहित्यिक कुशलताएँ खोजने में प्रोत्साहित करती हैं।
4. **सिद्धांतों और नमूनों का शिक्षण:** सिद्धांतों और नमूनों को शायद सबसे अच्छी तरह से नियमों की सूची के बजाय अगनात्मक रूप से सिखाया जा सकता है। सिद्धांत अथवा नमूने के शिक्षण का सबसे प्रभावी तरीका है ऐसे साहित्यिक कार्य से शुरू करना जिस पर शिक्षार्थी स्वयं अपने विचार रखें, शायद इस कार्य के लिए उनका खुद का सर्वोत्तम लेखन भी उपयुक्त हो। शिक्षार्थियों को युक्ति अथवा नमूने की पहचान की ओर ले जायें यानि शिक्षक उनका इस कार्य में नेतृत्व करें। इसके बाद उन्हें इसके लिए उचित नामपट्टिका दें। उदाहरण के लिए, शायद शिक्षार्थी वर्णित शब्दों में और उन घटनाओं में जो रहस्य बनाती है में रहस्य महसूस करे। एक बार जब शिक्षार्थी किसी युक्ति अथवा नमूने को समझ लें और उसका नाम सीख लें, तब उन्हें अन्य पढ़ने वाले कामों में इस युक्ति अथवा नमूने के लिए सतर्क रहना चाहिए और उनके स्वयं के लेखन में भी इसके इस्तेमाल का प्रयास करना चाहिए।
5. **शिक्षार्थियों को उचित प्रतिपुष्टि प्रदान करना:** यदि शिक्षार्थियों को उनके लेखन कौशलों के सुधार में मदद देने का उद्देश्य है तो उनके किसी भी रचनात्मक प्रयास को महत्त्व देना आवश्यक है और उन्हें सटीक प्रतिपुष्टि के साथ–साथ प्रोत्साहित करना भी जरूरी है। अच्छी प्रतिपुष्टि को केंद्रित, विशिष्ट और रचनात्मक होना चाहिए। यानि कि, इसे लेखन कार्य के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण आयामों तक सीमित होना चाहिए जिसमें शिक्षार्थी निरंतर अभ्यास से सुधार कर सकें और यह लेखकों की कमजोरियों के साथ ही साथ शक्तियों की भी पहचान करें। शिक्षार्थियों के लेखन पर प्रतिपुष्टि का एक मूल्यवान स्रोत कक्षा के अन्य सदस्यों के विचार हैं। प्रतिपुष्टि प्रदान करने का एक तरीका यहाँ वर्णित किया जा रहा है:
   - एक शिक्षार्थी अपना रचनात्मक लेखन कार्य सस्वर पढ़ता है।

- अन्य शिक्षार्थी इस लेखन कार्य में अभिव्यक्त विचारों का विश्लेषण करते हैं।
- यदि लेखक का संदेश दूसरों द्वारा समझे गये अर्थ से अलग है तब लेखक अपने इरादों और विचारों के बारे में स्पष्टीकरण दे सकता है।
- अन्य शिक्षार्थी लेखन में सुधार के लिए रचनात्मक सुझाव दे सकते हैं।
- यदि लेखक का संदेश अन्य शिक्षार्थी अच्छी तरह समझ लेते हैं तब सहपाठी चर्चा करेंगे कि क्या प्रस्तुत विचार मौलिक हैं और किस प्रकार का विस्तार लेखन को ज्यादा रुचिकर एवं सार्थक बना सकता है इत्यादि।

रचनात्मक लेखन के कार्य

लेखन में बौद्धिक विकास पर हुए प्रयोगों ने पाँच कार्यों का सुझाव दिया है जिनका प्रयोग शिक्षार्थियों में रचनात्मक लेखन कौशल के विकास के लिए किया जा सकता है।

सारणी 2

प्रतिवेदन करना	किसी घटना का प्रतिवेदन करना
अनुदेशन	बताना कि कुछ कैसे किया जाए
सुझाव देना	अपनी राय रखना
बहस/चर्चा	पक्ष और विपक्ष में
वर्गीकरण	जानकारी को व्यवस्थित करना

प्रतिवेदन करना

विद्यालय के खेल दिवस के संबंध में, बच्चों को बाहरी पत्रकार के रूप में देखने और लिखित प्रतिवेदन तैयार करने के लिए कहा जा सकता है जिसे वह वीडियो पर प्रस्तुत कर सकते हैं। घटना का परिचय, वर्णन और आकलन करने का सुझाव दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, विद्यालय के खेल दिवस का अखबार में वर्णित समाचार, शिक्षार्थियों को दिखाया और पढ़वाया जा सकता है तथा इस पर चर्चा की जा सकती है। इस प्रकार का प्रशिक्षण शिक्षार्थियों को भविष्य में पत्रकार, संवाददाता, चल वृतांत प्रसारक बनने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

अनुदेशन शिक्षार्थियों की उपस्थिति में साक्षात् प्रदर्शन की व्यवस्था करना जैसे कि चाय/आइसक्रीम बनाना और जो उन्होंने देखा है, उसके आधार पर किसी ऐसे व्यक्ति के लिए अनुदेशन लिखना जिसे प्रक्रिया के बारे में नहीं पता पर वह इसे करना चाहता है। इस प्रकार के दृश्य अनुभवों से सभी लेखकों की प्रक्रिया से पहचान हो जायेगी।

सुझाव देना

यह कार्य शिक्षार्थियों को सुझाव देने के लिए पत्र लिखने के समान हो सकता है। उदाहरण के लिए, संवादित माध्यमिक विद्यालय के प्रमुख ने महसूस किया है कि उनके परिसर में शिक्षार्थियों के लिए अब पुस्तकालय का उपयोग करना संभव नहीं होगा। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह अचानक से लिया गया निर्णय नहीं है जैसा कि बच्चो को लगता है लेकिन उन्हें लगता है कि यह एकाएक ऐसा मामला है जिस पर लिखित रूप से कोशिश करके वह प्रमुख को समझा पायेंगे।

चर्चा

विषय कुछ ऐसा हो सकता है जैसे कि 'खेलने को समय देना अच्छी अथवा बुरी बात है?' इस पर विचार, सुझाव दिया जा सकता है और एक खाके को भी प्रस्तावित किया जा सकता है उदाहरण के लिए:

- खेलने के समय पर निजी दृष्टिकोण दीजिए।
- एक अनुच्छेद 'अच्छी बात' (पक्ष) और एक अनुच्छेद 'बुरी बात' (विपक्ष) के लिए।
- सारांश और पुनर्कथन।

वर्गीकरण

चयनित काम कुछ ऐसा हो सकता है जैसे कि, शिक्षार्थियों को उन घरों की विशेषता लिखने के लिए कहना जिनमें वह रहते हैं, वह गये हैं अथवा उन्होंने देखा है। उन्हें बेतरतीब जानकारी की प्रस्तुति करने का सुझाव दिया जा सकता है। पाठ की चर्चा में, घर के बाहरी दृश्य, ड्राइंगरूम के दरवाजे, रहने के कमरों, आंतरिक हवा, खिड़की इत्यादि के वर्गीकरण के बारे में मार्गदर्शन दिया जा सकता है।

इन कार्यों को पाठ्यचर्या के सभी विषयों में करने के लिए शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। वह विषयों का चुनाव विज्ञान एवं तकनीकी, सामाजिक विज्ञान अथवा भाषाओं से कर सकते हैं। नये विचारों के निर्माण, व्यवस्था एवं अभिव्यक्ति की कोशिश शिक्षार्थी पाठ्यचर्या के विभिन्न विषयों से विविध विषयवस्तु लेकर, कर सकते हैं। शिक्षक भिन्न गतिविधियों का सुझाव दे सकते हैं जिस पर शिक्षार्थियों को रचनात्मक लेखन करना होगा।

लेखन पर ध्यान शिक्षा मंत्रालय ओन्टारियो, सुझाव देता है कि अनुवाद और निर्माण/रचना के कार्यों के लिए भी रचनात्मक लेखन क्षमता की जरूरत होती है। निम्न लेखन गतिविधियाँ शायद शिक्षार्थियों में रचनात्मक लेखन क्षमता विकसित करने में मदद करेंगी।

सारणी 3

कार्य	गतिविधि	उदाहरण
अनुवाद	जानकारी को मौलिक रूप में समझ कर मौलिक से परे रूप में दर्शाना	कीर्तिमान और प्रयोग किसी वस्तु का वर्णन; नाम पट्टिका कीर्तिमानों को लिखना; घटना के चित्रों को देखकर उसका वर्णन; आरेखीय जानकारी का वर्णन और व्याख्या; शीर्षक लिखना; भेंटवार्ता लिखना; आदर्श के अनुसार भारतीय ग्रामों का वर्णन
रचना निर्माण	समस्या के समाधान के लिए मौलिक विचार का उपयोग	कविता लिखना, प्रयोग रचना और उसे करना; काल्पनिक घटना पर कहानी लिखना; संगीत अथवा चित्र के प्रत्युत्तर में लिखनाः कहानी के अंत पर पुनर्विचार; कहानी शुरू होने से पहले क्या हुआ के बारे में लिखना

निष्कर्ष

प्रसंग के अनुसार उदाहरणार्थ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, कक्षा नवीं की पाठ्यपुस्तक (राशैअप्रप, 2002) से लिया गया है। विधि के अंतर्गत बच्चों से अनुरोध किया जा सकता है कि वह समाचार पत्रों से डा० अब्दुल कलाम के बारे में छपी खबरें एकत्र करें, विशेषकर वह खबरें जो उनकी यात्राओं के बारे में हैं। इसके बाद एक हफ्ते के लिए उनकी यात्रा विवरणिका तैयार करें, यह व्यक्तिगत अथवा समूह कार्य हो सकता है।

विकसित की जाने वाली क्षमता के तहत समालोचनात्मक, विचारशीलता, रचनात्मक लेखन प्रभावकारी होगा। इसी प्रकार शिक्षार्थियों को भिन्न विषयों पर लिखने के लिए कहा जा सकता है, जैसे किः

अपने चारों ओर के पेड़–पौधों और जंतुओं के बारे में लिखे अथवा ''शिक्षा हमारा मूलभूत अधिकार है'' इस पर अपने विश्लेषणात्मक विचार दीजिए साथ हीं शिक्षार्थियों को चित्रों, आरेखों और प्रतिमानों से वर्णन लिखने के लिए कहा जा सकता है जिसके तहत किसी घटना का चित्र, चित्र रूप में कोई कहानी, रूझानों का आरेखीय चित्रण, पहाड़ी की चोटी अथवा समुद्र के किनारे गाँव का प्रतिमान बनाना शामिल हैं।

इस प्रकार यह कहना समीचीन है कि भाषा शिक्षण की बौद्धिक बीज गठन पद्धति के अंतर्गत वर्गीकरण के

कई प्रमुख आधार है। रचनात्मक लेखन के क्रियान्वयन के लिए विद्यार्थियों को मुक्त अभिव्यक्ति की अनुमति होना, स्वयं के आकलन की अनुमति देना और लेखन के अच्छे आदर्श प्रस्तुत करना।

संदर्भ सूची

1. एंड्रयू, विलकिंसन (1986) *द क्वॉलिटी ऑफ़ राइटिंग,* ओपन यूनीवर्सिटी प्रेसए मिल्टन किन्स, फिलाडेल्फ़िया।
2. ब्रूनर, जे. एस. (1975) लैंग्वेज एस.एन. इन्स्ट्रूमेंट ऑफ़ थॉट्स इन डेविस जीन स्टैनफ़ोर्ड, हार्वर्ड विश्वविद्यालय, हार्वर्ड।
3. मेरी स्मिथ. (1978) *ए गाइडबुक फ़ॉर टीचिंग क्रिएटिव राइटिंग,* एलिन एण्ड बैकन, इन्क, बोस्टन ।
4. शर्मा, आर.ए. (1999) *फ़ण्डामेंटलस ऑफ़ टीचिंग इंग्लिश,* आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. सू, लॉर्च. (1981) *बेसिक राइटिंगः ए प्रैक्टिकल अप्रोच विनथ्रोप,* पब्लिशर्स इंक. कैम्ब्रिज. मैसाच्यूराट्स।
6. ऑनटोरिया, मिनिस्ट्री ऑफ़ एजूकेशन (1982) फ़ोकस ऑन राइटिंग, करीकूलम आइडियाज फ़ॉर टीचर्स।

****